eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 04, April 2024

भारतीय महिलाओं की समस्याएँ एवं समाधान

डॉ0 शालिनी सोनी[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र, राजकीय महिला महाविद्यालय, बेहट, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

Received: 15 April 2024 Accepted & Reviewed: 25 April 2024, Published : 30 April 2024

Abstract

समस्याएँ अधिकांशतः सामाजिक क्षेत्र में जन्म लेती हैं और उनका सम्बन्ध अधिकतर नारी–जाति से होता है। विविध समस्याओं और कुप्रथाओं ने नारी–जाति को बड़ी हीनावस्था में पहुँचा दिया है। पर्दा प्रथा के कारण नारी घर में बन्दिनी बना दी गई। दहेज की समस्या ने पुत्री के जन्म को ही अप्रिय बना दिया।

शब्द संक्षेप– भारतीय महिलाएं, नारी समस्याएँ, भारतीय समाज एवं समाधान

Introduction

बाल–विवाह से विधवा समस्या और वेश्या समस्याओं का जन्म हुआ। स्त्री की समाज में दयनीय स्थिति का कारण, जहाँ उसका स्त्री होना है, वहाँ इन समस्याओं के अभिशापों का उस पर लदना भी है। यह कहना बिल्कुल सही है कि निम्न वर्ग में नारी की कोई समस्या नहीं है, किन्तु मध्य वर्ग में जो नारी घर की इज्जत है उसे अपनी इच्छाओं और आशाओं का गला घोटना पड़ता है। यों भी कहा जा सकता है कि महिलाओं के साथ समस्याओं का जुड़ा रहना उनकी नियति बन गई है। जब वह घर में कैद थी तब भी उसकी ढेरों समस्याएँ थीं और आज भी जब वह बाहर की दुनिया में पूर्ण आत्म–निर्भरता के रास्त तलाश रही है। ये बात और है कि समस्याओं के रूप और नाम बदले हैं उनकी भयावहता कम नहीं हुई है। 'भारतीय महिलाओं की समस्याओं और समाधान' पर बहस चलाना आज की सबसे बड़ी जरूरत है। आज का साहित्य 'नारी' को केन्द्रीय भूमिका देकर इस दिशा में अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर रहा है। कुछ प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार हैं –

1. वैवाहिक समस्या (दाम्पत्य जीवन में असन्तोष की समस्या)
2. पारिवारिक समस्या
3. आर्थिक समस्या
4. विधवा समस्या
5. बाल–विवाह की समस्या
6. वेश्यावृत्ति की समस्या (आर्थिक अभाव के कारण महिलाएँ इस अपनाती हैं)
7. दहेज की समस्या
8. साक्षरता की समस्या
9. महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार की समस्या (बलात्कार, छेड़खानी आदि)
10. समाज में दूसरे दर्जे का माना जाना
11. सम्बन्ध–विच्छेद (तलाक)
12. कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ (दो मोर्चों पर संघर्षरत एक घर एक बाहर)

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 04, April 2024

गहराई से देखा जाए तो स्त्री की केवल अपनी कोई ऐसी समस्या नहीं है। इसकी हर समस्या की जड़ धीरे–धीरे बनते आये समाज की रचना में गहरी गयी हुयी है। इसलिए स्त्री की समस्या का समाधान केवल महिलाओं के द्वारा करना एकांगी है। चूँकि इस विशाल समाज की स्त्री एक कड़ी है। स्त्री की हर एक समस्या अन्त में समाज की समस्या है। हमें स्त्री–पुरूष सहजीवन सहज, आनन्दमय और परस्पर पूरक बने ऐसा समाधान खोजना है। परस्पर सहयोग पर आधारित संतुलित परिवार बनाने के साधन खोजने हैं। एक दूसरे का कोई शोषण न करे। स्त्री में कुछ गुण पालन–पोषण के कारण पैदा होते हैं, सहनशीलता और ब्रह्मचर्य आदि। अगर भारतीय समाज स्वस्थ स्त्री–पुरूष सहजीवन चाहते हैं तो हमारी आज की सामाजिक मान्यताओं में आमूलचूल परिवर्तन करना आवश्यक है। दोनों संयमी, स्वावलम्बी, एक–दूसरे के प्रति ईमानदार, सहिष्णु और परस्पर सहयोगी बनें। स्त्री–पुरूष दोनों के पालन–पोषण के संस्कार बदलने की जरूरत है।

श्रम विभाजन की आवश्यकता भी समय की माँग है। अर्थोपार्जन के लिए जब स्त्री घर से बाहर निकलती है। ऐसी परिस्थिति में श्रम विभाजन की पारम्परिक विचारधारा मोड़ना आवश्यक है। हर काम हर एक को करना चाहिए। नारी में निर्भयता और आत्म विश्वास जाग्रत हो, पुरूष में मृदुता, परस्पर सहयोग, सहानुभूति पनपे। स्त्री–पुरूष दोनों का आत्मसम्मान बना रहे। मानवी मूल्यों का विकास होने से ही स्त्री–पुरूष सहजीवन की स्वस्थ बुनियाद बना सकेंगी। परिवार ही संस्कार का श्रेत्र है । कुछ आधुनिक ढंग से परिवर्तन लाने की गुंजाइश है दृ आज्ञापालन की जगह चर्चा कर निर्णय लेना, लिंग भेद पर होने वाली असमानता पैदा न करना, परिवार में हर–व्यक्ति हर काम कर सके, नवविवाहितों के लिए कार्यशालाएँ तथा शिविर लगाना तथा खुलकर चर्चा हो सके। जीवन–विकास के लिए परिवार के हर सदस्य में अर्थोपार्जन क्षमता पैदा करना। स्त्री हो या पुरूष उसका सर्वांगीण स्वस्थ जीवन को बनाने के लिए खुलकर सोचने वाले और सन्तुलित विचारधारा वाले व्यक्तियों की जरूरत है। पूर्वग्रहों से बचना चाहिए ताकि जरूरत के मुताबिक बदलाव लाया जा सके। यदि आप अपनी सारी शक्तियों को, अपनी आस्था को, विश्वास को समेट लें और देखें कि आपके पास क्या शक्ति है तो वास्तव में प्रलय के बादल हट जायेंगे, मार्ग की जितनी बड़ी बाधाएँ हैं, वे भी हट जायेंगी। ह्रदय से और बुद्धि से समन्वयवादी होने की जरूरत है।

वैदिक समाज रचना में पत्नी सहधर्म चारिणी है – उसके बिना न कोई धर्मकाण्ड सम्पन्न हो सकता है न सामाजिक कर्म सफल हो सकते हैं। विश्वपला का युद्ध में जाना या मुदगलानी का शत्रुओं से युद्ध करके सौ गायें छीन लाना प्रमाणित करता है कि नारी का कर्मक्षेत्र केवल गृह ही नहीं था । वेद कालीन भारत में हमें जिस प्राचीनतम समाज का परिचय मिलता है वह किसी भी मापदण्ड से आदिम समाज नहीं है उसमें नारी की स्थिति के मूल में न आतंक की भावना है और न हीनता की ग्रन्थि– वर राष्ट्र को बाँधने वाली शक्ति है – वह मानवी है। उसकी बेड़ियों को तोड़ना है उसे रूढियों से छुटाना है। उसे आज ऐसी मुक्ति चाहिए जो उसे जीने की अदम्य शक्ति दे सके न कि प्रसाधन मात्र होकर रह जाये। आधुनिक युग में नारी केवल पत्नी–माता आदि सम्बन्धों के द्वारा ही अपना परिचय नहीं देती वह अपने आपको राष्ट्र या समाज के उत्तरदायी नागरिक के रूप में उपस्थित करती है।

कोई नियम, कोई आदर्श सब काल और सब परिस्थितियों के लिए नहीं बनाया जाता, सबमें समय के अनुसार परिवर्तन सम्भव ही नहीं, अनिवार्य हो जाते हैं। वह आत्म निवेदित वीतराग तपस्विनी ही नहीं, अनुरागमयी पत्नी और त्यागमयी माता के रूप में मानवी भी है और रहेगी । स्वामी विवेकानन्द ने कहा भी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 04, April 2024

है कि जब तक महिलाएं स्वयं अपने विकास के लिए आगे नहीं आएँगी तब तक उनका विकास असम्भव है।

नारी की आर्थिक पराधीनता को दूर करने के लिए कुछ सुझाव हैं जिससे वह लाचारी का जीवन न जीकर सम्मानपूर्वक जी सकती है दृ प्रिंसिपरल, शिक्षिका, डॉक्टर बनने के अलावा वह होटल का काम, कला सम्बन्धी काम, चित्रकारी, नृत्य, संगीत, सजावट, दर्जी का काम, नर्स, टीचर, आया या भोजन बनाने का काम, टेलीफोन गर्ल, स्टेनो, प्रेस रिपोर्टर्स, टिकट चेकर, कंडक्टर, टाइपिस्ट, सेल गर्ल, रिसैप्शनिस्ट, लेखिका, सम्पादिका, फोटोग्राफर, इंशोरैन्स एजेन्ट आदि।

दूसरे स्त्रियों को सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार मिलने चाहिए। माता–पिता कन्याओं को दहेज इस रूप में दें कि मुसीबत के समय उनके काम आ सकें। ब्याह में फिजूलखर्ची न हो। नारी पढ़, जीवन के विभिन्न कार्य क्षेत्रों में आये लेकिन घर को मिटाकर नहीं। घर और बाहर में सामंजस्य स्थापित करके तभी समस्याएं सुलझेंगी।

एक समस्यात्मक समस्या है 'किस ओर जाना है' क्या करना है और नये समाज में नारी की क्या भूमिका है, नारित्व की नयी परिभाषा क्या होना चाहिए। सब कुछ अस्पष्ट है। इन सब प्रश्नों पर वैज्ञानिक और समाज शास्त्रीय दृष्टि से सोचा जाना चाहिए। वास्तविकता और विचार के बीच की दीवार पाटनी होगी। गरीबी का बोझ कमजोर वर्गों के लोगों पर भी ज्यादा पड़ता है। नारी स्वातन्त्रय या समानता हमारे सामान्य विकास कार्यक्रमों का अंग है परन्तु सरकारी कार्यवाही तब तक न तो कारगर और न ही पर्याप्त सिद्ध होगी जब तक कि महिलाएँ स्वयं अपने अधिकारों और सम्बद्ध दायित्वों के प्रति जागरूक नहीं होगी। नारी स्वतंत्रता भारत के लिए विलासिता नहीं, अपितु राष्ट्र की भौतिक, वैचारिक और आत्मिक संतुष्टि के लिए अनिवार्य बन गयी है।[2] नारी का क्षेत्र केवल 'चक्की चूल्हा, जच्चा–बच्चा, मंदिर (किचन, किंडर, चर्च) तक ही सीमित नहीं है। भारत भी अपनी आधी शक्ति को जाया नहीं करेगा इस शक्ति का राष्ट्र तथा परिवार के उत्थान के लिए पूरा उपयोग करेगा। अतीत के अध्ययन से, वर्तमान के विश्लेषण से हम स्थितियों को बेहतर मोड़ दे सकते हैं, उन्हें पूरी तरह बदल नहीं सकते। स्त्रियों को सहयोगी बनना है प्रतियोगी नहीं। अपने हितों और हकों से ही यह पहचान शुरू होती है।

राष्ट्र की श्रेष्ठ संतानों के निर्माण के महान राष्ट्रीय कार्य का दर्जा देकर मातृत्व को हर सुविधा, संरक्षण और मान्यता देना राष्ट्र धर्म माना जाना चाहिए। बराबरी का मतलब भी स्त्री–पुरूष बराबरी ही क्यों? एक नारी की दूसरी नारी से बराबरी भी क्यों नहीं? नारी–नारी के बीच की असमानता भी मिटाई जानी चाहिए। पुरूष की जन्मदात्री और उसके निर्माण विकास की उत्तरदायी होने से स्त्री पुरूष से उच्च है भी केवल अपने मानवीय गुणों और अपनी क्षमताओं के प्रदर्शन से अपनी इस स्थिति को मान्यता दिलाने की जरूरत है, नारे बाजी से या केवल हक माँगने से नहीं, क्योंकि हक माँगने से नहीं मिलते, कमाने पड़ते हैं, अधिकारों का अर्जन करना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है। यह संघर्ष जितना तीव्र होता है जीत उतनी ही सुनिश्चित होती है। यह अर्जन गौरवमय होता है। नारी की स्थितियाँ या दशा जानकर उन समस्या का निदान खोजने में ही समाधान निहित है। आने वाले कल की तैयारी ही इन समस्याओं का हल है। भविष्य में नारी 'मानुषी' होगी और आज है भी। नारी, नारी होकर भी मातृत्व और पत्नीत्व की भूमिका निभाते हुए भी, सर्वप्रथम मनुष्य को, मानवी हो और उसे नारीत्व को ऊँचा उठाकर ही सब समस्याओं का समाधान मिलता है। ऐसा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 04, April 2024

नारीत्व जिसका पृथक अस्तित्व हो, अपना एक अहम हो, गौरव हो। नारी–पुरूष के सम्बन्धों का आधार मानवीय प्रेम, सम्मान और सहकार हो। इसके अतिरिक्त स्त्री–पुरूष में सहज मैत्री सम्बन्ध विकसित किये जा सकें तो संसार की अनेक विकृतियों से बचाया जा सकता है। स्त्रियों का भी स्वतंत्र व्यक्तित्व और जीवन का कोई उद्देश्य होता है उनमें सामाजिकता, दृष्टिकोण की उदारता, चरित्र की दृढता, निर्भयता और नेतृत्व के गुण विकसित होते हैं।

नवयुग की मांग है कि लड़कियों को प्रारम्भ से ही स्वतन्त्र चेतना संस्कार देकर उनका सहज मानवीय ढंग से विकास किया जाए – विकास मानवीयता आधारित हो न कि मात्र 'नारीत्व के आग्रह' पर। युगों से दलित, पीड़ित रहने के कारण जो हीनता के संस्कार बन गये थे, उन्हें आधुनिक भारतीय नारी के अपने रक्त और प्रस्वेद से इस प्रकार धो दिया है कि आगामी युग की नारी को उस पर कोई रंग नहीं चढ़ाना पड़ेगा। भारतीय नारी को पश्चिम की आत्मघाती प्रवृत्तियों का अन्धानुकरण कर अपने पैर नहीं काटने, अपनी संस्कृति के अनुकूल पैर मजबूत बनाने हैं ताकि सहयात्रा दुःखद न हो। मानवी रूप में उसे स्वीकार कर उसके मानवीय अधिकारों का प्रश्न उन्नीसवीं शती के सुधारकों ने उठाया। इक्कीसवीं सदी में वह स्वयं झाँसी की वीरांगना होगी क्योंकी उसकी अपनी शक्तियों को खोज न समाप्त हुई है न असफल। उसकी यात्रा आलोक से और अधिक आलोक की ओर ही होती रही है। यही सब समस्याओं का समाधान है। 'स्त्री' रूप से उठाकर 'मानवी' रूप में प्रतिष्ठापित करने का प्रयत्न ही सब समस्याओं का निदान है, उपचार है। पाश्चात्य आयातित मूल्यों से उभरी हुई समस्याएँ हमारे यहाँ हलरहित हैं। भारतीय महिला तमाम बनी–बनायी नाशकारी रूढियों को नकार कर अपनी अर्द्धमानव स्थिति को अस्वीकार कर सम्पूर्ण मानव बनने और चेतना को संघर्षरत रखने के लिए प्रयत्नशील है। समाज में अपनी अहम भूमिका के साथ स्थापित होना चाहती है। समाज में इन नये मूल्यों का निर्माण करने से ही नये युग की नारी की नयी छवि उभरेगी।

"हजार बुझे दीपक एक दीप नहीं जला सकेगा। एक जला दीपक दीवाली नहीं मना सकता है। युग बदला समस्याएँ बदली। आप अपना विवेक जागृत रखिए। आज हर एक नारी को सिंहवाहिनी होना है"।

संदर्भ सूची–

1. निबन्ध मातृभूमि देवो भव दृ महादेवी वर्मा दृ 'संभाषण' पृष्ठ –15।
2. अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष 1975 के अवसर पर प्रसारित संदेश – इंदिरा गाँधी।